नु॥तहांप्रानिस्याहीकरैवैदै॥साहिजहानु॥२॥सा
हिबडौकविमुखननकुंकौंगुनबरनैंजांहिं॥जो
तारेसबगगनकेमूठीमेंनसमांहिं॥३॥जिनपुरुष
निकेबसमैंउपजेसाहिजहानु॥तिनसाहिबके
नामकोअबलाधिकरैबयांनु॥४॥छप्पै॥प्रथम
मीरतैमूरलीयौसाहिबकिरानुपउ॥ताकौमीरं

पदुबहुरिमहाकविराई॥२॥ अथ रचना॥ विग्वालीय
र नगर कौ बासी है कविराज॥ तासौं साह्नि मया करैस
दागरी वनि बाज॥ जब हां कवि के मन बढ्यौ न व यह
कियो विचार॥ बरन नायिका नायकनि कियो ग्रंथ वि
स्तार॥४॥ सुंदर करता सिंगार है सकल रसनि कौ सार
नांम धर्यौ या ग्रंथ कौ यति सुंदर स्रंगार॥५॥ जो सुंदर
सिंगार कौं पढै गुनी सज्ञान॥ तिन मानौ संसार मैं कि
यो सुधारस पांन॥६॥ संवत सोरह सै बरष बीते अठ
सी ति॥ कातिक सुद षष्ठि गुरौ ग्रंथ रच्यौ करि प्रीति॥

धा॥सिंगाररसवर्णनं॥नवरसमेंसिंगाररससबनेनी
कोत्र्प्राहि तामेंनीकानायकावरननहैत्र्प्रवनाहि॥३॥सो
पुनिसुंदरकविकहैनीनिभोनिकीनाति॥स्वकीयापर
की॥पुवरसामानिकाविचारि॥४॥स्वकीयाकहियेत्र्प्रा
पनीपरकीयापरनारि॥सामानिकातासौंकहैंजोकें
धनसौंहारा॥५॥स्वकीयाकहुं॥६॥एनतएनस्वकीयानि
केवरननहैंकविराज॥पतिकीत्र्प्रतिसेवाकरैसाज
सुधाइलाज॥६॥कवित्त॥देषीतनैनकेकोननिलो
त्र्प्रधरानिहामेंमुसकानिकोघानौं॥वोजनिवोलसु

कंठह्यैंचलैंपगपैनकहूंअहटानौं॥सुंदरतासनही
सपनैंअहज्यौंभयौतौमनह्यैंविलानौं॥ह्वैंवसुधा
वसुधाईसवैंपुनियाकीसुधाईसुधाइहजांनौं॥७॥
दोहा॥ सोईस्वकीयानारिविधकहैमहाकविराज
मुग्धामध्याप्रौढ़ावरनौंतीनवनाई॥८॥मुग्धाल
क्षणं॥जाकेतनजोवनझलकैझलकैकछुकआइ॥
तासौंमुग्धानायकाकहैमहाकविराइ॥९॥कवि
त॥चिलकौंअवचाहतहैननमंदरजोवनजोत
निकाचिनगीथिरताईकीआवनिपावनिमैंपुनि

चंचलताकिडगैयोंडगी॥वनितानिकीयोंधलिपाव
तिहैंमुषनैंनिकसीकिसुधासैांपगी॥जिनञ्शंषनिस
घेहीदेषनहीअवनेञ्रषियांनिरछांनलगी॥१०॥
अग्यातजोवनालछणं॥दोहा॥सोमुग्धाहैभांति
कीपंडितकरतविवेक॥कहीएकअग्यातयोंवना
ग्यातजोवनएक॥११॥अपनेतनमैंजोवनआयोअं
नहीजांनतवाल॥ताहीकहतअग्यातजोवनासुंद
रगुनहीरसाल॥१२॥कवित्त॥धाईसोजाईकैंधाई
कछुकहीधाईकैंपछीएकौंनैंठईहै॥वेढिरहीनि

हचिंन कहा सुनि मोहि सवै सुधि भूलि गई हैं॥ सुंदर दे
षि डरन भई सुपजानु रमां फसु पाधीन ई है॥ काची
कली सी हा कलि पचै अव छोटी सुपारी सी आजु भई
हैं॥१३॥ अथ ज्ञातजौवना लक्षणं॥ दोहा॥ जोवन अपनैं
देहमैं आयौ जानैं वांम॥ कवि सुंदर लासौं कहै ज्ञात
यौवना नांम॥१४॥ अथ कवित्त॥ छूनी नितंव लषै दुलही
की आली निहकी मन सालन चांनी॥ सुंदर जोवन रू
प सराहत सुंदरि आंषिन हूमैं लजांनी॥ डीठि वचाइ
सखानि की सौं वह देह कौं देषि हा एमुसकानी॥१५॥

॥अथनवोढालक्षणं॥दोहा॥मुग्धापनमैंब्याहही॥जो
एकहीएनौढानाहि॥सकुचतडरपतिरतिकथासुनी
नभावैजाहि॥८॥नवोढाकीरितियहनवभूषनका
चाह॥लाजकरतअैसी॥अैसेकोकरिसकैसराह॥७॥
कवित्त॥जाकेरूपआगेरूपकोरतीकलागैतेजुम
रिछविकीतिलोतमानतूलेहैं॥सुंदरनवेलीअलबे
लीनईदुलहविअंग॥अंगरंगरंगवहरेंदुकूलहैं॥क
नकमनकहोतभूषनवनकनेकनकनकवरननरचे
कोसोफूलहैं॥आलिनिकीओटदैकेचकचकहग

देकैंदुरिदुरिह्वैरेखि जात दूलहै ॥ ८ ॥ खेलत हैं दुलह
नि सुंदर सहेली साथ सोने की सी बेली अलबेली सी वधू
नई आयसु सों सखि सब सरहत ताहि धाई कह्यो डीठि
न लागि जाइ कैं रहे दई ॥ नव मास बालिक ह्यो ख्याल
ही मैं आल बालनि ह्वि कालव ह्वाल ऐसे हालहै नई ॥
ऋक्षैं न हि आई मुख पीरी परि आई चौंकि चिरिया की
नाई भजि भौन कौन मैं गई ॥ ९ ॥ नवोढा अनुसार दुल्हा
भौंने की रात के भोर ह्वा कौंन मैं बैठि रहा दुलहा अन
बोले ॥ छाती सौं हाथ छिपाय कैं सुंदर नारि नवाइ दु

रइकपोलैं॥देषनकौंजुरिआंईसवैतियनंदजिठांनी
कैरेंजुकलोलैं॥एकहसैएकवांहगहेइकअंचरषैंचि
कैंघूंघटषोलैं॥२०॥अथविश्रब्धनवोढालछिनं॥
दोहा॥सकुचवहुनडरकैछोरंचकुपतिसौंनेकुपत्याई
तासौंवुनिविश्रब्धनवोढाकहैमहाकविराई॥२१॥पग
सौंपगपिंडुरीपींडुरीसौंमहिसुंदरज्यांघनिजोरिरही
कुचदोऊदकेकरएकहिसौंकरएकसौंघूंघटगा
ढीगही॥इहभांतिलएडरकैपतमवैंसगसोवनहैं
लडहाडुलही॥अतिहौंजुगईछविकासीछविदेषि

ये रतिको राऊन ज्ञान कहो ॥२२॥ दृष्टांत नवोढा लु
ब्धा ॥ कंचनसो काया योहे सकुंदनसी हैगई ॥ सुंदर सि
षि लक्षंग ल भाग रैन डगनें ॥ भाल सब वचन वलवि वल
हैं ॥ व १० ॥ लन सकुचन मन मैं मन उरतकौं तगनें है म
रे चित वाइ रही छबी की ये है छबि छिनु भरि छूटैन ही
भूजहूं लौं हगनें ॥ रंग व गी प्रथि य सगव गी पलक
नि डुंग मगा डुग निडुग र च लों डुगनें ॥ २३ ॥ मध्या नव
ढो भेद ॥ दोहा ॥ लाजकाम जाके जवै है तन माहि हैं छि
समांन ॥ सुंदर मध्या नायका तासौ कहै सुज्ञांन ॥ २४

॥कवित्त॥जौफिरिकैरोटिदेतौहैविछुरनसमछाती
लागीरहीलाजलागतहैप्रतिहीं॥आंधैंमंदिरही
यमरतिनदेषीजाईबोलतहीबोलीयतदंप
तीलकतिहीं॥पीयपासिपरेकेजिकैरैअंगमेरैनऊ
मोचतहीरातिजातिएसीभईगतहीं॥सुंदरयौंकां
मकेसंकोचकैंउठीनवामनमाझेंलाएहोति
मतिकुमतिहीं॥२५॥मध्याअंतसुरता॥कान्ह
ठीर[illegible]तिकेजिकियेंकविसुंदरसोहतअंगरसोंहैं
॥आरसीमैंमुषदेषिसंकोचनिलोचनलोचनहीं

नलजौहैं॥ नालहसेइहवीचिरहिंललनापियकौंन
किकैंनिरखौंहैं॥ पौंछिकपोलअंगोछतिहेठअमैं
ठानिपूछैंमोहनिमौंहैं॥२१॥ प्रौढालक्षनं॥ दो
हा॥ कांमकेलिमैंकुसलचतुरपतिसौंरतिसौंप्रीति
॥ सोईप्रौढानाइकाजाकैंहैयहरीति॥२२॥ कवित्त
॥ कौनकहूंलिंगनआसनचुंबनकीनेअनेकनेकौन
गिनावै॥ औरनिमानैंनियाकौंनकुपतिकीछातीपा
छिनुछोडानभावै॥ भोरभयौनियजानैंनजीसौं
इतेपरएचतुराईवलावे॥ अंचरसौंटकिमोनीकी

मालकैसुंदरसीनलताईदुराबै॥२५॥प्रोढा अंतसुर
ता॥कवित्त॥रसरंगभरीअंगअंगनिप्रियापीतसोइग
एसुषलैसुषदैजाइहंवीचिजगेहरिजूउघरेअंगिया
परडीठिगईपरकैकुचऊपरदेव्योनबसनसुंदर
आठकौअंकसुधैसैलसे[illegible]मनोहुमनमत्थकैहाथी
चढ्यौहैमहावतजोवनअंकुसलै॥२६॥सोवतिसी
रतिकेलिकरैपतिसंगपीयाअतिहीसुषपाएदे
षैसरूपसषीसबसुंदरीफिरहीठगसीठगलाए
॥कंचुकीचोवालग्योकुचऊपरकूटिरहीलटयौं

छवि छाये ॥ मै ठैहैं उदित मनो गज बालि महेस भुजंग निसे

गलागए ॥३०॥ अथ मध्या प्रौढा मान ॥ मध्या प्रौढा मान कैरे

नवत्नह होत गन लछन लाजैं ॥ धीरा एक अधीरा दूजै

धीर अधीरा तीजो ॥३१॥ धीरा लछन ॥ कौन हू एक र

मजे नै निज रिस होइ जनाई ॥ धीरा कौ लछन इहै कहै

मुहू कविराई ॥३२॥ मध्या धीरा नायका ता कै है यह री

ति ॥ जाके वचननु मैं कछू रिस की होय प्रतीति ॥३३॥

कवित्त ॥ प्यार है मेर मया कर मोहन मो कौं तो मनों

महानिधि [illegible] दूठी ॥ आजु की बानक देषन सुंदर सो

ऊमि लेत्तिय होय अरूढ़ी॥ केसी वि राजं तिनी कौ नई रु
रकौ अगुरी मैं अनूप अंगूठी॥ प्यारे कहौ हम सौं प्यारी सौं
यौं तव तेरी सौं तें सबु झूठी॥३४॥ मध्या अधीर
॥ बोले बोल कठोर अति जानें कोप दुराइ॥ मध्या धीरा
कहत हैं ताही सौं कविराई॥३५॥ कवित्त॥ लाल परे ब
छ रानि चराइ कैं आइ कैं बाहर कों फिरि भागे॥ काल्हि
गए चलि बाहिर ही महा सुंदर आछे बनाय कैं बागे॥
आजु तौ लोचन ऐसे हैं लाजन मानों मजीठ के रंग में
पागे॥ लाजन जी डरडारि दियौ तुम तौ हरु जटपार

नलागे॥३॥ अथ अधिर्मूढा लक्षणं ॥ कछूदुरैउघरैकछू प्रगटकैजेमोन ॥ मध्याधीरा प्रौढा सुंदरताहिवखान ॥३२॥ यथा कवित्त ॥ उठिआदरकीनौंपायापियआये तुमनीदकहूंसनेकेमुषतें ॥ हगमोरें औमोहैंमोरनकहूंनजनायौकछूरसनाहूमुषतें ॥ चाकिकैदिगदैहगभीतरऔरकौंसुंदरअंतरकेदुषतें ॥ अखियांनरिवानकछूसबासोंकहिदेकौंमईनकहामुषतें ॥३३॥ अथ प्रौढाधीरा लक्षणं ॥ काहूमिसकरिकोपकौकामनिकरै प्रकास ॥ रतिकौंहूषाकैरहैकहिप्रौढाधीरास ॥४०

॥कवित्त॥आवनहेआदरसौंउठिआईआगेंलएमोढवे
लसुंदरजनायैनेहजियसौं॥बैठारेलैसेजपरिआपुनव
सरिबैठानहांकहोलालआईलागीमेरेहियसौं॥सुनिय
हभौहेंचंदाइसनराइनैंनकछुपैसघालिषीजीकाहू
एकांतयसौं॥नवजाइजानीअबपासचामप्रसकाहू
नीनाहीसषीसोंरिसानीहेपियसौं॥४०॥दोहा॥प्रधी
र॥सहपरधनहूकनिरषिजाकेंप्रतिरिसहोइ॥षि
जिकैदेइउराहनौंप्रौढाधीरासोइ॥४१॥कवित्त॥दिग
बैठतहैसुंदरबैठेंगारजिनकेनिसनेहफंदाफसाए

वनीयानिहींकौंवनीयासुनिहेहुतीयांलगिऔरनिकौंव
साए॥ हसिमोसौंहहाहासलेवोकहाहसिआएजहांवन
हां हसिए॥ [illegible] रिभवापिलितो [illegible] रिभवारनहैजेरिभावनहे
तुमसेरसाए॥ ५३॥ [illegible] अलसानजसानलोगेनहीगानकि
लोगुंलगनहीवोलनहुं॥ [illegible] कविदुदरकलं टपोरवु
कौंघुडूलपरसौंहकैरंअनहूं॥ तिनसौंवकहाकहा
ए जिनकेस॥ पनेहूंनलाजभईकवहूं॥ जगमें [illegible] वीथो
षदहैंसवकौंपेधुमाइकीऔछदिनाहीकहूं॥ ५४॥ [illegible]
[illegible] धीरजधरैंअधीरजिहिक

रैतुपियसौंमांन।औटाबीराबीरबुंदरनादिखान॥
४५॥कवित॥एककहूंरतिमानिबिहारीनिहारि
कैंप्यारीकछूनकह्योहै।वैठेरहेदिगमारेनहुसुग
बीरजमुंदरगादोगह्योहै।कांनउतोकरकामि
निकेउरअंसुनकोंपरवाहवह्योहै।कहेनमा
सलैबोलीहैयोंहमसोंतुमसोंरसकोंनरह्योहै
४६॥ज्येष्टकनिष्टाबरनंन॥दोहा॥जासोंपति
अतिहितकरैतियजुजेष्टानाहि।४७॥जासोंघ
टहितुनाहकैसैकहतकनिष्टानाहि।४८॥अगसे

११

पिछु ने म्याहलैं नव यलतें न विचार॥ प्यारे हीके प्यार
परसव हीय हमोहार॥५८॥ टीका॥ आपसमैं मंदि
रही वैठी दोउ सों नेर मैं तिही समैं आइ कान्हा एक
बालक है है॥ एक सों कहो कि आगैं आनु आंखि मूंदि
होलैं याही मिसि वाकी दोनौं आंखि मूंदि रहे हैं॥ तौ
लौं तुरत सुंदर पकरि अंक भरि वाकौं भुज रकौं पान
करि गारै कुच गहे हैं॥ याली हों अचंभे रही लाल के
एकला देखि दैया इन वानन कैं अभेस वह वहे हैं॥
५९॥ [illegible] दौरै दौरे पर पुरुष सौं सुंद

करजुग्रीता वहुलचतुराई वुधिमें परकीया की रीति।५०।
कवित्त। चैन के हेतु नैनकौं न चैन पावे सुंदर ह्यां नैं कहूं के
निरखे नैंनें न हरियत हैं। ह्यो रा नी जिठांनी सासु ननद
वसैं आसपास आलहू कौं कछे चैं उसास न रियत हैं। वे
ठे भौंन कौंन मैं कहो है बात एकतु सके से केये कान्ह
के वषान करियत है। अवही ववा वचनैं सैं है तु पर
है माई गोकुलमैं कूं किफ किपाव धरियत है।५१। ग
ह्वा विदग्धा जाहे ताकुलटा मुदिता मानुः रहीजु अ
नुसयाना दि ह्व स परकीया हैं जांनु।५२। अथ गु

दूहा॥ नयेहोतहैहेयचोसुरतिजुतानिप्रकार॥ जोदुरावै
गुप्तसोंसुरतगुप्तानारि॥५३॥कवित्त॥ सारेसुवानिपटा
वनकोंसबकीमतिमाहकोंठेलिपठैये॥ पारैषिनईपि
जरानिकेंसुंदरकोंलिगहेतुमुकाहिदेषियै॥ भोरभ्रना
रकेबीजनिकेंभरीमांगकेमोतिनकोंमुषनैये॥ नीछि
नचेतुकोचांदनीसोंतनुबोधहीरैतजेवादिगनेये॥५४॥
दूहा॥ कहीविदग्धानायकाताकेदुविद॥ विवेक
वागविदग्धाएकहैक्रियाविदग्धाएक॥५५॥ वाकविदि
दग्धा॥ सुंदरजोंलिकेंमंदरकेपिछवारेहैंसुंदरठाढे

न्हाई॥चाहकछूकहोपेसकुचैनवकीनीहैबातहूंमैंच
बुताई॥एछेपैसनिकोंमिसकैंतनबाहींमैंपीकोंसहेर
वताई॥साघचलैंगीहोंकालिहीजानुगीदवाकेदहेरे
पूजनिमाई॥४९॥क्रियाविदग्धअवलेनं॥जानहीवाल
अलीनिमेंलालकोपाछेनैवोलसुन्योंअनुरागी॥कौल
छियेलखिजेहेंसखीलखपेहैकेलाजचकेरसपागी॥वो
छिदईनवसाथकीसुंदरयौंडगरीडगदैकेरआगी॥के
रकेंनारिकहोचलनारिसोंटेरनकेमिसहेरनलागी॥
लितावलीनं॥जाहिमातसोंप्रीतिन [illegible] प्रतिल

हे सखी यों ताहि ॥ कवि सुंदर नारीनि में कहे लछिता ताहि
पूर्व ॥ दो० लछिता ॥ प्रीति भई भली भई वा हौ नित नित नई ह
म सौं दुराव दई काहे कौं करति है ॥ हि नून तौ होन सुष
हिन की सुनें तेवानति नहूं सौं सुंदर लषाई क्यौं धरति
है ॥ एक तन एक मन एक जीव एक प्रांन आपस में दु
हून को एक सी षरति है ॥ प्रछति हौं कान्ह जब कैसा
कान्ह कौन कब पजान है कैसें तब ओर तकि परति है
॥ अथ कुलटा लछिनं ॥ १० ॥ निसा दिन जाकें रति क
था सदा कांम सौं काम ॥ मा तं अनेकन सौं रमें कुलटा

जाकौ नांम॥१८॥ कवित्त॥ अंचर डारि रही अलबेली ह
गं चे बल चंचल हैं चपला नें। सुंदर नैन किसैं न नहीं में
अनेक प्रनागत आन न घातें॥ बैठि झरोखनि मांझ
हां झुकि कैं दुरि कैं मुरि कैं मुसकानें॥ तोहरी लौं जी कौं परे
कल जौ ले चलैं कछु कोंम कलोल की बातें॥१९॥ अ
थ मुदिता लछन॥ दोहा॥ सुनत भांमनी बात के फू
लै जाकौ ग्यान॥ तासों मुदिता कहत हैं जे कौ बिलास
रसा न॥२०॥ कवित्त॥ जोग बरात न एक सगरे तु मरा
न जग कैं चले सब कोऊ। सुंदर मंदिर सुना इहां

॰अबके रषवारे हैं नाहिन जोकैं। तातु कहै न वही ताषै हैं
लहुरी दुलही घर हीं यह सोऊं। फूलि गई सुनि लिवात
यों गात समान न कंचुकी मैं कुच दोऊ ॥ ६४ ॥ अथ अनु
सयाना लक्षन ॥ कैहें अनुसयाना त्रिविधि नहं एकप
ह्वै भेद ॥ थिति न सन लहो न सहेट के भावी जिय मैं षेद ॥ ६५ ॥
कवित्त ॥ कैसे है कुंज के सुंदर फूल विराजत पात जराव
जरयो सो। या मैं लो आवन पावत ही पति रति के लि
के रंग भरयो सो। आयो वसंत वयारि वहै अव तौ य
हृ देखि ये गान धरयो सो। सोवन यों पुनि पान करै पु

बढ्यो गयो प्यारी कौ यातें तो सौ ॥४॥ दुतिय भेद ॥ दो
हा ॥ यों सोचत संकेत ठौर कौ आगैं होय न होय ॥ दूजो
भेद अनुसयान कौ यह जानैं सब कोय ॥५॥ कवित्त ॥
सासुरे कौं चली वा हि रवा गति लोकन [illegible] ही अंखियां
भरि आईं आंनन तें है गुसलीन नकीतिन आनन हांकां
न मैं समझाई ॥ देखे विना गुभलो है भली रति केलि कैठौ
र कौं पछिताई ॥ जान जहां कौं नहां पुनि सुंदर मंदिर
स्नेह घनें अवराई ॥३॥ यापय आवे संकेत ठौर तें लिय
अटकर तें जानें ॥ नगई हैं पछिताइ गुलियम न यों

नुसयानववालैं ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ हरिआएजवैसिरफू
लधरैपकैकरसुंदरगोपनई ॥ नवनागरजौकैवाम
मेंहैमुरझाइरहीअनुरागमई ॥ पछितानवुतैमन
हीमनमांझकैहैबुधिकाहूनमोहिदई ॥ जिहितैरहे
खेलकैंलालगएहैंकहाकहीएआलीहौंनगई ॥ १० ॥
अथ सामान्य वनिता लछिन ॥ दोहा ॥ तासैंसामान्यवनि
ताकहैमहाकविराई ॥ जाकेमिलैंसवनरनिकौंधन
दीजेउपजाई ॥ ११ ॥ लटकमटकमुसकाइमुरकरै
कटाछसिंगार ॥ वहुदामिनिकोंदानिजवआयौदे

षे हाराः॥२॥कहौं अन्यसंजोगदुष्षितावकों अगविं
नाहिः॥मांनवतीसामान्यत्रियनिमेंएडेनान्योंत्र्प्राहि
॥२३॥अन्यसंजोगदुखिता॥पियरतिकरिहेजात्रि
यनिसुननहीदेषीअनषाई॥सोवहअन्यसंजोगदुः
खिताकेहेमहाकविराई॥७०॥विदूषिता दूती॥वि
छुरीअलंकेनैनरसभरेमलकतमपकतपलकैवेश्रा
रेववि वाई है॥ अदंनवदलकीनेसबनसकलकहि
सुंदर॥अधरमेंनथरंनलजाई है॥ नगरजगरजोतिश्री
सीअंगअंगहोतिकंचनकीचारीजानौंसांगमैवना

ई है मैंतो ही पठाई सुधि लेन बाकसाई की सुहृती दुष
दाई देषा केसी ह्वैके आई है ॥ ७५ ॥ वक्रोक्ति गर्विता
लक्षन ॥ कहैं वक्रोक्ति गर्विता ताकौ दुविध विवेक ॥ प्रे
म गर्विता एक है रूप गर्विता ॥ जाकें नायक की प्रीति कौ अ
पमें होय अभिमान ॥ प्रेम गर्विता नारि कौं सुंदर यहै बषा
न ॥ ७७ ॥ कवित्त ॥ नित पलै रोई कैन भलो जु निरंतर रुष
न नेरे बनावत है ॥ हमकौं तौ हमारेही प्रानन कौ प्रन
प्रे सो जहां टिग आवत है ॥ जब सुंदर हौं पहरौं गहनौं
तब यौं कहि कैं उतरावत है ॥ तुव मूरति सों मेरे नैंन

लगे इन नैनों हूं न अंतर भाव नहीं है। आरूषण दैलक्ष्य को। अपने ने नन के रूप पर जो नारी गरबा है। रूप गर्वितानायिका ताहिक है कविराई। ९६। कवित्त ॥ आनन हमारे केत मास सुनो सुंदर एरी चुंबन करत को। न कौ हूं न अघाने है। निरखि निरखि आंखि जोवे चांत मधी सब चाहत चकोर निके लोचन लुभात हैं। औ र सुनौं कमल के भोरे भोरे दौरन है। वैठिवे कों आस पा सि आंनि मडरात हैं। काटे मन अधर तिया डरत में री आली विडरत विडारत हाथ रहिजात है। १०। अं

अथ तीनि मान को लक्षण॥

दोहा॥ पिय अपराधी जानि तिय हृदै रूखी होइ॥ तासौं ये
क रूप कौं मान कहै सब कोइ॥ २१॥ लघु मध्यम गुरु क
हत हैं तीनि भांति को मान॥ ज्यौं उपजै जैसैं मिटै
त्यौं सब करै बखान॥ २२॥ अथ लघुमान लक्षण॥ और
नारि तिन देषत पिय कौं देषि जु तिय अनषाई॥ यौं
उपजै लघुमान कछु बातन हीं मैं मिटि जाई॥ २३॥
कवित्त॥ पिय देषत देषै जु और तिया हग त्यौं र पिय
न वै हीव दलै हरि जान के मान वना है मई इह भांति
मनावन कौं अवलै करि सुंदर चातुरी सौं कियौ गा

नपैजानिकैंलाननैंचूकचलेजनरहोगयोवोलतलीन
जीमानकह्योहसिसीवेनलेजुभलो॥४६॥मध्यामुभा
न[illegible]छनं॥दोहा॥औरनारिकौनामलैवालनकहै
सुजांन॥योंसुनितियहोइमानिनीसोकहिमध्यांम
मान॥४७॥इति[illegible]॥वोदेहपायुपियापतिकाकछु
कौंमकथानिकोमैंदलचाहौ॥सुंदरमोहनमुष
तैंमुकनागरनारिकौपानविकाल्यो॥प्यारीदायौं
सनराइकरैटलरैंनाकौभावनहंयौंनिहास्यो
॥मोनकेभारभल्योतटक्योरयमानौंमन्मथकौ

करिमास्यो ॥ १६ ॥ प्रात मुरारि उठी कहि नारि स्यौं कोसौं भि
ना वत्त है मुष को आव ॥ जानो हौं जानत नाहिन वा सौं
है वा तनि कोने मैं जाइ जुरे जव ॥ प्यारी सौं प्यारे कह्यो क
रि जो तिकै तेरा सौं ते रायो पूछति है सब ॥ सुनिकै न
व सुंदरी वो जनत [redacted] यौं नतु का नहीं मानत ज्यों न हनीत
व ॥ १७ ॥ ग्रतु ज्ञात त्निह्नुतीं ॥ पतिआवैरति ग्रनन
करि तियन किचि हन रिसाइ ॥ उपजत है गुहमान
तहं कूटै पकरै पाइ ॥ १८ ॥ तकोकिता ॥ लाजेकेमाल
नगेपो जघिजावक पावकसे भये नैन पिया के ॥ ना

हौंनहीं हारिनि होरनजोगी मरहीतें कन्तउंनतियाके
॥ सुंदर पाइनप्यारीपैमलौपैगयेनटिसेहुलास
हिंयाके। फूलिगयेमननूमिलिगईरिसरूटिकैंवंद
गएभ्रुवियाके ॥८८॥ अथ प्रवत्स्यत्पतिकाभेदवर्ण
नं दोहा ॥ उत्तममध्यमअधमअरुदिव्यअदिव्य
विवेक। ऐसेंवरननायिकावाढैग्रंथअनेक ॥८९॥
याहीतें संक्षिप्तकरि सुंदरकियोविचार। वरनन
आठौंनायिकासिंगाररसकोसार ॥९०॥ अथअष्टना
यिकानामं। प्रोषितपतिकाखंडिताकलहंतरि

तातेंम विप्रलब्ध उतकंठिता वासकसज्जाना
म ६२ स्वाधीनपतिका नायका अभिसारिकाग
नाई आठप्रकारभेदहैंवरनैंमहाकविराई
६३ जाकेकंथाविदेसकोंगवनकियोजवहोइ
पियविनव्याकुलतियजुतिप्रोषितपतिकासो
ई ६४ प्रोषितपतिकानारिकीरीतिकहीक
विराइ दसोंअवस्थादेहमेंआपतजाकैंआई
६५ मुग्धाप्रोषितपतिककौविरहनपरगटहो
त ज्यौंघटमध्यकेदीपकेभीतरहीउद्योत ६६

पद्धेचित्र॥परदेसकौंलालचलेयहहांलैहैबालकौं
काल्हहीकेंबिछुरें॥मनहीमनखेदनहीजाएभेदस
खीहसोंसुंदरवानजुरैं॥प्रभुवामरिसावनहैव
सनीलौंसंकोचतैंभीतरकौंजुमुरैं॥कुलवंतिकैं
जैसेकटाछचलैंचलिकैंहगपंथचलेंहीमैंदुरैं॥
६३॥मुग्धाप्रोषितपतिका॥सुंदरहौंगईह्वैसखी
नुकैंबिलोकिगांईवैरिनिकौंवादौविषाविरह
बलाइकी॥सखिजातखांनपांनहूपरंगस्वांनस्यां
नमांनसकौंचिंताआंनहोतचितचाइकी॥का

लि हीं चलै हैं कान्ह मथुरा कौं माई आजु ऐसी राति भई द
ई राधिका की काहू की बोलनि है जो [illegible] अव लोकनि
ल जाली कैसी होइ गई ढाली पग जे हरि जु राइ की ॥
५८ ॥ [illegible] ॥ जानति हौं अब लौं न क
छू बिछुरे ने बिषा यौं व टैन नहीं कौं ॥ आली कहौं पै क
ही न परै पल छोटि भए [illegible] जु भई मन नहीं कौं ॥ सुंदर प
नौ कौ बीतन सौं परि वाके लगैं लगैं राहु शशा कौं
यौं न ज्ञि गहु गयो पिय पंथिग ह्यो न तबै अति यौं
दु बजी कौं ॥ [illegible]

पीन मृगोन किधौं नियगोन कि नारकि जौंन नयानभा
रो॥पावुस पावक फूल कि सूल पुरंदर चाप का सुंदर
भौंहै॥सारी वयारि किधौं तरवारि है वारि दवारि
कृपान विसारो॥कोइल कूक परी तन लूक किवा
न कवो लच कैार कौ चारो॥१००॥परकीया प्रोषि
तपतिका॥मान चल्यो परदेश कू विरह कि तापकि
वा लदुरावो॥सोपरकीया प्रोषितपतिका सुंदर नारि
कहावो॥१०१॥कः विप्र लांजन जो भरि कचे तुसास
नो भांवत है उरते न उरे भांतर ठोर कों नैन निके

अंसुताप्रुनिनीचहीकौंनिचुरें सुंदर चाहनवातक
होअबरासुखतेंसुखहीकौंसुरे दानदयालबेले
देइतौदुषदेषलैंषुसेदुरेंहीदुरें २ [illegible]
[illegible] बिछुरेंमीतदामनलेवकौं
गुनसौंविरहजनायो नगरनायिकाप्रोषितप
तिकासोवहनारिकवाहै ३ [illegible] नकाबिछुरेकंप
सौंमिसकरिहगभरिलेइ प्रेमजनावैयालयेंजो
आवैधनदेई [illegible]
[illegible] अननमानरतिपतिकहूं

आवैजाकैंधाम॥दो॥चिहनअनबातअतिसुबद
खंडितावान॥अथखंडितानारिकीकहैमहाकवि
राइ॥रूठिरहैचिंताकरैचुपह्वैरहैरिसाइ॥५॥
खंडितानाहकीछातीमैंदेषिनखछतनारिनवोढ
कह्यौपुनियौंसें॥सुंदरवागेकीचोलीमैंमेलिकेल्या
प्रेहैंचंदकआगरीकैसें॥मिलिवेकौंहमकौंयैंदेहु
ज्यौंसुनिकैंहरिसौंरहरैसें॥नायलईउरसौंहसि
पौंकसिदोकरहैकसिराखीयेजैसें॥अथमुग्धाखंडि
ता॥आएरूहरनिमांनिकैंमोहनरूसनयेबस

२ वे वदलै हैं । यौं पियकौ नके रूप लियानै कै वौलै
कछू नतु है कि न लै हैं । आषिन वीचे नै आंसू गिरे
कहि हैं सुंदर काजर सौं जु मिले हैं । सौं व वियोग अ
रविंद नैन आसिके मानौं चैंट वा छुटे हैं । ८ [illegible]
[illegible] कानन न कानननु हैं हडोलन सुजान
कान्ह आननकी आभा आंन भांति पषीयत है वि
न गुन माल जु धरी गुपाल लाल आंषें लाल ला
ल कै न लै षैलै षीयत है । सुंदर अधर पर पीक
कील सन लीक वीच कारे काजर की रेष रषाय

नहैं॥ऐतेपरकहतहोदेष्योनवकहौमेंजुऔरश्रा
गलाइकैंदायालैदेषियनहैं॥६९॥जागेकहूंहग
लागेकहूंरसपागेकहूंतुमह्यांश्रजकहूंहौ॥घान
कहूंकहौवानकहूंचलजानकहूंचितएकित
हूंहौ॥काहेकौंसुंदरसौंहनिषाकहूंठहरानकहूंकबु
हूंहौं॥सांझकहूंअधरानकहूंपिछरानकहूंभएप्रा
नकहूंहौ॥७०॥परकीयाछांडिनायका॥प्राणकहूरतिमां
नीविहारिकेंमोहनमोहनीदोषिनईमनहीमी
सुंदरदासनुसैनकछूविधिमेरेललाटमेंपोलि

मा०

२३

छिदीना॥ वैर कलौ सगरे जग सौं हितु सौं तुम ह्वै यह

कीनौ॥ सुंदर पै इतनौ कहि कैं नारि सासन तजि अथ

पांतरिता नी॥ [illegible]

[illegible] नायक को षंडिता ना कै है यह वात [illegible]

आस्यौ कै रकछु लैवे ही को घात॥ ९॥ पति अप

राधि अंनकरि देखि रिसानी नारि॥ पकरि हाथ प

हुचानि लै पहुचा लई जु नारि॥ ३॥ [illegible]

[illegible] पहिलै बलि सौं रिस करै फिर पाछै

पछिताइ॥ कलहंतरिता नायिका कहै महाक

विराई॥४॥कलहंतरिनानारिकेरीतियहैप्रमता
पाउवेईउसासनरिंद्रीविकलप्रलाप॥४॥
मुग्धाकलहंतरिता॥लछिलालनजाइरही
लखनाकहिसुंदरवैठी॥श्रलीगनमौं॥हरिहारेवु
लायनवोलीजवैतववेऊगएउठिकैवनमैं॥ए
तौसंतापकसौपहिलैंपुनिकैसेतचीतनदीत
नमैं॥कहिकैनसकैसषीह्वैमोककूपछतांइमस
मनहीमनमैं॥५॥मध्याकलहंतरिता॥
श्रातजादोंगइदेकलोचनरहैंतजाईकहो

समुझायमैंनमांन्यौतुहिहिनहैं फिरिपतिगएहूं
तेपछितानि अति रातिरतिपतिसुंदरतैंवायौत
नुतिनहैं कहाकहौं आली कछु कहिवेजौ नां
हीजैसीलाजकांमदोउ हमिलिमोसौंकराइनहैं
वोत्योहानजान अनवोलैंहूनरह्यौजानवोले
अनवोलेदुहूनांलिनकठिनहैं ७ ॥ प्रौढाकलह
तरिता ॥ सोहैंकरीकोरिकोरिसुंदरकितौनि
होरिठाढेमैंयहापजोरिजैसैंहोतचेरोहै ऐ
सेंइनभांतिनमनाइहारेमोहनन मांनैंनाह

होइरह्यो काठनें कोरयौ है।। फिरि गयौ पानु जबतरस
न लगी तब कहूं पाईयत अब सोचत घनेरौ है।। पु
हिलैं तू वैसी भयौ कैसो है अब नैं सो यह नैं गुहेइथे
सो मनु जैसो मन मेरौ है।।२८।। परदी थाकलहैंत
हिलौ।। नैन वारी अटानि जिठानिन सों पुनि सा
सु की कैत्री रिसाई सही।। तिन नू लगने गुनसौं
तिन के ननरी दिन दोहके दाहदह्यौ।। इत नौं
कायौ जाके लयक हि सुंदर ताहू सौं अजहैं
रूठि रही।। सखी सोचत हैं नव की चित मैं विधि

कौ गनि जो नायक कछू न कहौ ॥१९॥ [illegible]

[illegible] ॥ मान दयनि वहु दर्वे कौ रसिक रिदि

यो उठाय ॥ ता नर ह्यौ पिछितायपुनि नलई मा

लछुडाई ॥२०॥ [illegible]

[illegible] ॥ पहुचे ठौ रस हट को पायन पावै ना

[illegible] हि विपुलव्या कहैं पंडित लोग विचारि [illegible]

[illegible] नि विपलव्यानि की भास कछे वास देइ

सषानि उरह नौं चिंता विकल उदास ॥२१॥

[illegible] ॥ सौं हनि कैं न व जा कौं सषीव

नकोंयदकाढ़नवाईगईहैं।कुंजकीदहरीठाढीलरी
लैचकेजेकंमानरठांनदईहै।कुंजविहारीनिहा
रेजहांनवहींवहवौंकिचकेंचिनईहैं।सुंदरदेख्यो
सखीवनमेंऐसोजुओंबिनहींसरोसनईहैं॥आ
नख्यावित्रगल्छ्या॥घराघहरातिगतिवीजुरीन
दहरातिजुठिआएहरिपातयेसमेघमरमें।कं
मकीचपेटलयेंलाजकीलटस्योंहरिसोंनम
ईमेटसहेटकेघरमें।भेचकसीएहीकहिसुंदर
प्रचंभौनहांहलेजौनचलेसूझिगईसोंवरस

मैं आली आली आंषिन सौं अबलौं कहत आली
तनि आंधी वात आंननमैं आधी क अधरमैं ॥ २
ध ॥ [illegible] ॥ उठि आई हौं देषनि कौं पि
य क्यो सिवना उवन्यो कुलि कैं घर कौं ॥ कहि सुंद
र भीन र जाय जो देषौं लौं लोजन नहीं कहूं कौं नहर
कै ॥ हूंहवी चिलौ वानक आंन गहो कर तानि उ
ठौ ध्वरि संवर कैं ॥ जब जान्यौं व चाउत कौं
हूं सषी लब आंन घस्यौ हियमैं हरि कौ ॥ २५ ॥
[illegible] ॥ अति आनंद सौं उठि आई

पियापीयदेख्योनभीतरिकुंजनतेहैं।।तियलेतउस
हविराहचलीआलिसौंकहिकैंइनवाततहैं।कहि
सुंदरतोसौंकहाकहियेजिनऐसीकरीसखीनधनिहैं
।।मिसकैंसुनिमोसीकेम्यौंतेभई।फिरिऐसोवनाउ
कहूवनिहैं।।५।।सामान्यवनिताविप्रलब्धा।।:
कीरसिंगारबनिबनिबहुतगईमेंभेटिबेगेह।प्रि
त्योनपिययायोन-धनयातेंव्याकुलदेह।।२।।
विप्रलब्धासमाप्ता।।अथउत्का।।कोहूलेआयोन
हीपियसहेटकेथांन।।योंचिंताजोकरतिघ

तुल्का जानै हुलसौं सु ॥ २८ ॥ कांपै रोवै नन लव पैश्व
लिपैं डाइ जंभाइ ॥ रीति इहै उल्का निकी सखी
सौं कै है सुभाइ ॥ २९ ॥ अथ विरह ॥ कहै तैन आयो
कोन्ह हाकन्हह्को पियनी धों कहूं कांम के कले
नुनि मैं राख्यो जानैं चोरि है ॥ सो वत धोम
न हीमैं सुंदर नव लनारि कैसी है यौं विधमा
तु कंस कैन भरि है ॥ ऊचे न उसास लेस के
न ऊंचें देवि सके पूछे न सखानसौं ऐसा इहां
लौं नमौरि है ॥ सब की बचाई डीठि चातुरी

सौंमोरितनैंननिकीकोरिनसौंचितयोंमरोरि
हैं।३०।।मध्याउक्ति।।बानननबीननिसौंछूटक्यौ
क्रिमिलीतियकोऊरह्योरमिनांहीं।।छोटनौचू
कनसुंदरखादिनमैंकह्योऊठनिलागीहैंस्याही
।।आयौनहींसखीपूछियैकेसैंकहामनुदेखैहै
नेरोउगाहीं।।चौंपचढीकिमियोचितचाउकि
आंरलसनींदकिवैपरवाहीं।।अथप्रौढाउक्ति।।
खेलतसखीनिसाथगएरहिब्रजनांथकैधौंउ
रनाहिहाथकोऊकहूंकहापरीहै।।हांतौकि

सो हनु किधौं चलायौ है चूकि चित सुंदर कवि कहै क
हूं जीय माहिं धरी है। सकुन भयौ किधौं क
छु और ठाठ ठयौ किधौं काहू मन तें न यौ देवै म
ति हरी है। और बार आवन प्रवास में रेत्वास
न ही आजु यौं प्रवार कोंन हूं कुमार क्यौं करी है
३२॥ परकीया यथा ॥ कंत॥ गुरु चैन सब यासों न सो
तनि सपने हूं न कों मन के रैकव हूं॥ करि मानि कें
तिनि सों यौं हाक है कि डर ए तै हों न डर हूं कवहूं
काहू सुंदर नंदकुमार जु ए तिन कोंन न कौंन

हियैंनकहूं॰हरिकेहितमैंजेकरीइतनीहरिकी
नीजुआपनहींब्रजहूं॥३३॥सामान्यवनिताउ
दा॥काहूकौंधनदेबहुनबसिहोइबस्योवि
विअ॥जाननहींआयौनहीयालैंब्रजहूंमित्र
॥३४॥अथवासकसज्जा॥निश्चयमेरीसेज
परिपियआवैगोआजु॥वासकसज्जाजानि
सोसजैसुरतिकौसाजु॥३५॥पियसुखसखि
सौंहसैपूछैसजैसिंगार॥वासकसज्जाजानि
सोकहिसुंदरमोहार॥३६॥मुग्धावासकस

ज्यौं॥ भौंन कें कौंन के भीतर जाय कैं बैठी सिंगार
कौ साज बनायो॥ देषत हैं दुरि द्वार की ओरनि को
ह्वलस्यौं सौं नभेद जनायौ॥ चाहि चरित्र विनोद
के मैं न हूं आवन पो आति भ्रम्य गनायो॥ ३७॥ [illegible]
[illegible]॥ आवहि तेज बटि अन्हाइ वैठी पा
टी पारि ओंछें ओंजि एडी मांजि कहकहा लागे है
॥ भगर भगर हौ न आभूषन सब तन सुंदर स्यौं
फूलन बसंतन की बाग है॥ देषत है कहा सुसका
ते आल आनन है हैं आनन सौं सुरत सौं आनि अनु

रागहैं।। अथयोनस्त्ररमांऊवरेन वजारेदायौतेरैंनो
रीमाईइहांकुसलीतेंकागहैं॥३८॥ छोटावासक
सज्जा॥ बेठीसिंगारकैंदेहमेंयों अनुरागदिपैदु
तिज्यौंगनमें॥ प्रतिजेवलगेसिरफूलनतेंजेकैंज
हारकौजेहारिलौंपगमें॥ लागिरहेहगद्वारकीओ
रलषैंकविसुंदरयौंटगमें॥ आवजावहिनेपि
वजोलिपियायौंविछाएहैंकंजमनौंमगमें॥३९
॥परकीयावासकसज्जा॥ छोरानीजिठानीषा
सुनंदसवराखीमाईसुंदरकह्यानीकहिवरनव

रनि सौं ॥ सारि का सुवा निहूं के पिंजरा उतारि धरे
मुखु कैं नकासी बाहर घरनि सौं ॥ दिया अंवरा
इ गयो अंधियारें दूरगुनि कौं टरि है आई चुपचाइ
कैं उरनि सौं ॥ आयौ पियहू है आसपास कै के
आसपास ह्वैं निज सास टकटोरन करनि सौं ॥
॥५०॥ दो० अन्यनायिका वासक सज्जा ॥ पाय पैं कंकन
ले शुभी माला मुदरी हार ॥ यहं मनोरथ साधि मन
साजै सकल सिंगार ॥५१॥ सविता वासक सज्जा ॥
अथ स्वाधीन पतिका पूरमा ॥ अति बस भयो

रहैपियजाकैंसदाजुपियकीप्यारी॥ताहिकहत
स्वाधीनभर्तृकासुंदररूपउजारी॥४२॥रीतियहैस्वा
धीनभर्तृकासदारहैजुरसीली॥प्रेमवाकसबरा
गसुनततहांभावैउरुगर्वीली॥४३॥स्वाधी
नपतिका॥सोवतलेतकैरोटविनोदकेनीचेल
टैंपलकासैंपरीहैं॥दिषतहीहरिसुंदरदौरिजाय
नागिनिसीलपटीहैं॥लैदुपटाअपनौंअपनेक
रपौंछिकैंसेजहीमांझिधरीहैं॥प्यारेकौप्यारनि
हारियौंरीझिभईचकचूरसबासमगरीहैं॥४४

मुग्धा स्वाधीनपतिका॥ सखियनमेंबैठीजहां
थांदेखौंहिहृदिलहंलाजनहौंगरीजांउंनैंकन
जुलैटरैसेजपरिपौढेंबैंनदेहिंकरवटिफेरि
लालललचाइगहिसुंदरगरेलगैं॥ यानेंतोहि
रहुलिहौंऔरलैलूंजांनतिहैकहियौंसुभाव
हाहाहाहिकैहरैंहरैं॥ मोहनकेमंदिरमेंकैसी
कैसीसुंदरीहैंहैंधौंकहामोहनजूमोहीसुम
थाकैरै॥४९॥ प्रौढा स्वाधीनपतिका॥ चाहैचित
चौंपचाइलोचनरहेंपथाहसुंदरछुडाइंग

गुंजपुंजकौलयो॥रहीनषछुविछाईमांनिकौ
सरसाइजेहरजराइकीअनूपरूपकन
यौ॥चौकीपरवैठी।आइसहेलासौंकरमाई
एइडोजजराइवेकौंठाठजवहांठयौ॥देखिवैं
सुभावइरहौपछिताइपछिताइहाइहाइ
पाइनकौंमांगौंकौननहौंनयौ॥५६॥परकी
यात्याग्यानपत्रिका॥ऐसोभयोरहेलानजैसें
जलमांझमीनसुंदरअधीनअतिकांमकेरस
निसौं।आलिनिमैंमिलीआलीगलीमैंहौंचली

काल्हि लाजनि हौं गई गड़ि याकी विहसनि सौं ॥ लपो
टाइ जहां तां उमि नैन कुठां उठां जु एक भांति कै है
गां जु डर औ जस निसौं वा लौं सन राइ तव दौरि
गहे धाइ पाइ कहि यौं कहा वसाइ पैसे मांनस
निसौं ॥४१॥ अथ प्रगल्भा स्वकीया लक्षनं
रूपवती तरुनाई निपुन जु तानैं सकल कलानि प्रे
म निहूत जि देत है धन मोहीं पिय प्रानि ॥४२॥ इ
ति प्रौढा नायका ॥ ७२ ॥ अथ धीरादि नायका लक्ष
नं ॥ दोहा ॥ बोलत बनाइ वायकौ पिय पहि आप हि

गाई॥सो कामिनि अभिसारिका कहै महा कविराइ
धुशरा नियहै अभिसारिकानि की सबै समान सिंगा
र॥प्रेमा हु संका कपट चातुरी ली एकर अभिसारा
४०॥ कृष्ण अभिसारिका॥ प्रौढे हुते पलिका पैर पा
उ पुलपरि औरदियें दुपटाकौ॥ लपाई लवाइ अ
लीन न लाकहूं यैतें बनाइ सटाकैन सांका॥ जे हरि
कौ पटकै जब हानयौ सुंदर देहरी आनि अटका
॥ अंग अनंग तरंग उठे माना नौं मोर गई सुनि घोरघ
टाकी॥ ४१॥ अभिसारिका॥ जो लौं होन चली तौ

लौकै सोकरी है लवलीहाहा ललीचलीअलीलैनू
मोहि जाइकैं ॥ आई उठि मंदिर तें कौन चौंपवाइ
न सौं इहांदे दमो आइ दुमार ही तुपचाइकैं ॥ वैठि
रही कहा अवगोंनाइ तसा हूं घट कैं सुंदर सकुच
के सी रही तु पजायकैं ॥ ते हीन ही ही एके हुलास
सब दरेका श्री पीतम कौं अघर पान सुख रस प्याइकैं
॥५२॥ श्री ठाकुर जी की सुख विलास ॥ पहिलैं जु भयौ पहकै
सो उदै कहि सुंदर मंदिर मैं चहुँ ओर नि ॥ पुनि श्रा
ने ही आइ उठी व सुवासु रह्यौ भरि गहु सुगंध म

कोरनि॥ बिछिया पुङ चालु घुघुरून हक्यौ लह गासु
नियौं मन मैं मधुरी धन घोरनि॥ पुसकात सी आप
ही आइ गई है जो याद लगनि रछी हग मोरनि॥
५३॥ परकीया अभिसारिका॥ स्यांम कों न्याई संदे
सो सखी सुनि कें सब सुंदर साहस बाढे॥ चोंधि कें
भूषन बोरि गेरे बिछियानि के वेग दै कांकर का
ढे॥ घूघरी को घरि मोरक सी आंगिया हूं के बंधक
सेन हि गाढे॥ जाय व पहूचीत हां व हप्यारी जहां
हरि है रत है मग ठाढे॥५४॥ दिन ही अभिसारिका

परकीया

ऐसें चलीपियपेंविछियानिउतारिकें चौंधेक
रुनछुरे॥ कोसिषदेइजुकाहूकौंपछेसषी
तेमिलींजिनकेमनमोरे॥ जानकहांहेतुका
एकहांकुपीहेकछुनेंनतोमोतिनमोरे॥ ३२
ऐसापरोसनिसोंकहिरंहिगीदोरिकुगंधकी
डोरें॥ ५५॥ हिंडोलाप्रसंग॥ आहटपाइगुपाल
कौंग्वालनगलीमहिजाइकेंघाइलीयोहे॥ वातनि
ऐसीगईजुरिकेंनगन्योंकोकमासआनिवीयो
है॥ सुंदरराहौंउरहीचकिसानकिदंपतिकौंप्रति

गाढौहीयौहै॥ चाहीएरातिकीयौ दुहिकैंसुदुहुंमि
‐लिकैंदिनहौमैंकायौहै॥५॥ कृस्माभिसारिका
॥ सोधिसहेटरहीरसकैंसववासुरकीसुधिवीसवि
सारी॥ हिनुकैंतुमसौंनमहीचितईभवहोसच
टौमुंचट्यौकुलगारी॥ कोलनितैंछुटिमोरचलैं
तिनकीश्राभिसारिकाछांहनिहारी॥ दैरिचलीदु
रिवेकहंयौंतियजानतिहैवहजानअध्यारी॥७॥
द्वितीयाकृस्माभिसारिका॥ कारेघनघटाभारी
पहिरीलेकारीसारी ओंधिनमैंदेषौतेरौकारी

कजराई है ॥ कारी है कुरंग सार घासि कै लगायो ग्रं
ग कारे चोवा कंचुकी लै मनौं हीलि गाई है ॥ कारे पा
र सुंदर पुहार सब आभूषन कारी बैनी बाढि
परि हो दरिद्री पुहाई है ॥ ऐसे समैं ऐसी है कैं जा
इ मिली कान्ह सौं आजु ही तौ सगरीक राइ कों
मआई है ॥ १८ ॥ [illegible] फूलनि सों
गुही मांग चंदन चढाये अंग अंग मनी है गंग मां नौं स
रद के नीरकौ ॥ सोहत है सब तन मन मोतिन के आ
भूषन मोतिन की जोति सों मिली है जोति चीर की

सुसकांति आछे अति दंतनिकी दिपै दुति तैसीए
गुराई कहि सुंदर सरीर की॥ चांदनी सी वाल मिलि
चांदनी मैं ऐसी चली जैसे छीरसिंधु मैं चली तरंग
छीर की॥५९॥ सामान्या वनिता अभिसारिका॥
सुंदर सवल सिंगार सजि चली वाल इह आस आइ
आजु मन मानतौ धन लै हौं पिय पास॥६०॥ अथ
नायकानि रूपण॥ दोहा॥ सुंदर मुग्धा नारि के
लज्जा कै अधिकार॥ लाज काम सुए होइ है मध्या

कैं विस्तार ॥९१॥ प्रौढा मुग्धा नारिके रसकौ वहुत प्र
काल ॥ जो तिय धीर अधीर है कहियत है धीरम
॥९२॥ जो नारि वितु धीरजहि कहि पैं अधीरनमा
सु॥ धीरज धरै अधीरजहि धीराधीरा नांम ॥९३॥
नियाज्ञ सटी अधि कहितु कहत कविसयनिका
स॥ परकीया सुकेसरसतें होंहि कहुं परमास ॥९४
सामान्या तिय के यहै केवल धनसौं काज ॥ इह वि
धि भेद तिय तीन के कहे महाकविराज ॥९५॥ स्वा

६ नायका ज्यौं कही त्यौं नवमायौं होय॥ जाकौ पि
य परदेसकौं चलन कहति य सोइ॥६६॥ चाहै चलै
विदेसकौं छिनमें जाकौ ईसा॥ होइ प्रवत्स्यतभर्तृ
काकहि सुंदर नारी सा॥ इति प्रवत्स्यतनीयकी
श्रासनवैजसा सा॥६७॥ प्रसगन होइ चलै न पावय
नीयमैं श्रासा॥६८॥ अथ प्रवत्स्यत्पका॥ सुंदर
वालम वात कहूं परदेसानेकौं चलिवेका चला
ईवां न कहै नैं प्रति पैन अचानक सो धुनि वाल
मान मैं आई॥ पछिसकै न सखानिसंकोचनि

बूडि गयो जियराई ॥ नीच रहाकर स्यौं व हस्यौं कि
रि कूचे कों नारि नि नारि उठाई ॥ ६९ ॥ मुग्धासुरता
न्त्यवस्थिति यथा ॥ भोर भयें मथुरा कों चलैं गे पौं वा
ल बली हरि नंद लला की ॥ बोल सकी न सकोच
नि नैंहु नियारी भई मुख जोति लिया की ॥ हाथ
रि काइ ललाइ सों वेढ़ाय हेत पगां कवि सुंदर
ला की ॥ रेखि मनों कर पातु कें आषर श्रोरक
परही बिचवा की ॥ ७० ॥ प्रौढासुरतान्त्यवस्थिति यथा ॥ प
यौं मुरझांनी सु नेह हरि गौंन तु बार हनी म नेंकं

मेकलाहै कैगईपांहनकीपुनःमोपुहःगारकहुं
पलनौनहलीहै चाइनचाहैनचितैकहुंनवेले
पलनाचलिवेकीचलीहै ॥

॥ हरिजनपुराकौवलैगेछगीकहूंगी
नहांविछुरीरतियां बृखभानुपुत्रावनितानिमें
वैठेश्यानकयोंहीपुनीवतियां तिहिवारजुवा
जमेंवातोकहूंकैविधुंदजानेकोजानतिया
ननवाहीकोजानतकैमनुजानतकैवहगांन
तहैवतियां ३२

कृ०॥ पानमच लै विदेसकौं यौं बोलै परनारि ॥ तौ
हि जपौं लै रविरहमान्ना देहिं उतारि ॥ ७३ ॥ अथ
अनुभाव लछन ॥ पियनैं करै तिय सौं हिय हित
पननतै पिय प्रीति ॥ यह सोउ उत्तम नायिका
उत्तम जाकी रीति ॥ ७४ ॥ उत्तम भाव लछन ॥ कि० ॥ अ
पकैरैं कर सौं कर औरति या को लिये फिरै औ
ध न दामिनि कौं दुहुं भांतिन सुंदर कान्ह बधै
जुनि कौ पनक हुका
लोचन न्याल हैं आनन के वह जामिनी जागे हैं

संननिकौं॥७ अथ वचन सौं इतर भाव न याग निभा
वेत क पति भामिनि कौं॥७४॥ अथ मध्या लछ
नं॥ पिय के हित सौं होत नाहिन अ न हित अन हित
अन हित होय। औं देखें जो अनुसरै सो तिय मध्य
मा सोइ॥७५॥ कवित्त॥ अंग जानि जगे निसि जागे
न हां लियें प्राण सुगंध की बास बसी॥ ज्वलनाल
खि लाल की पेन कटाछ लिलि॥ दिठि कै पाठि दै बे
ठि रही॥ कवि सुंदर सौंहैं करी कर लजा सौं हसि

कैसेंहिं हू कहदही जो हरि किता विनती जब कान्ह क
हो ॥ दाहिक्षुं दूरसौं हैं करी नव रूपा कहौ सखी
सौं हसिकैं कहिनू कव ही अब सांची सही ॥ ७१ ॥
अथ खंडिता लछन ॥ दोहा ॥ तिय सौं पान महि तक
रैं तिय रिसाय विनु काज ॥ सो यह अधमा ना
यिका बरनत हैं कविराज ॥ ७२ ॥ कवित्त ॥ आ
वत औं देखि पिय आगे आय लये तिय बैठा
रि कैं जै कै कहो आदर भगति है ॥ सुमन सुगं

धमौंनसेजकेसमीपराधेताहीसमैंभयौ।अतिसे
वकसोपतिहै।सुंदरसवादजामैंसुधाहूतेंताको
ऐसेंसवालमकेवदनतैंबातनिकसतिहै।एते
परिवोलैतऊज्ञानमसौंसतराईमहराइसुमं
हांइसीउठतिहै।७६।अथपृथ्वर्द्धिन्यादिवर्णं
नं।अथअवस्थानिकेभेदवैप्राणप्रथमवबो
नि।प्रवतिपकेघंगचिह्नतेंजातिचारहैजा
नि।८०।अथमिश्रि   चित्रिणीश्री
रसैंखिनीलागि।हस्तिनिजोइहंसमनलिवस्न

नहैंविस्तार [illegible] कम
लकेफूलकीसुवासअंगसुकुमारअमलसीयो
निजहेंजलननहीपै [illegible] चंदसौंवदननतनचंपक
सोंकुंदनसीवनीवसवठौरजैसीजहांवहीयै
भावैदेनप्रजासेनवसनसौंरुविहारलाए
लाजमानपालिहसकीलीसहीए थोरेथा
ईपिकवैनीविचछुनसरगनैनीजामैंगनसुंद
रपदमिनीलंकहीए [illegible]
[illegible] छनकटिपानकुचमीनसेचपलनैं

नगजगौंनाकारेवारमोरकीसोवानाहैं।अधुको
सुगंधजाकेसुरकेजलकोहैं।लांवाहैनठैंगना
नपातरीनन्यारीहैं।छुंदरसजोमसुकुमारयों
मनजिहंवा।विसेनफूलवडुगरोलहंभसोपाना
हैंरातिसोंनरतिउपभोगहीसोंरति।चित्रसंप
तिसोभावरयों।चित्रिनीवषांनीहैं।अलंस्थि
नीवर्णनं।मोटीलांवीनसदेहजैवीमोटीकटि
वीनटेढी।चितवनिकुचछोटेबोटेमनहैं।योनि
मेंदुगंधकामजलघनेघनेवारउताइगंजा

लेंवीतेगानस्पोंघनहैं॥तोतोपटमावैंनषसुरत
मेंनलावैंवार[redacted]नातोगानद्याहानैंरोस
सोंपनहैं॥होरघहैंदंलपाईघोरोनवहुनषा
इ॥ऐसेजाकेचिन्हसों॥ईसंषिनीकोंतनहै॥ध्व
॥ह्रस्तनीसुलछन॥जंघादेहऐसेठमोटमरेंवारणो
री॥ग्रांग्रपथोरी॥लाजपेटभरषातहैंस्वप्याहैंकें
टेंहेंपाइपाइकीग्रागरीहैंदेहासवठेगनासी
कोरपुनिवोलेघहराइकें॥कांमजलकोहैंगं
धमदकोगयंदकेसीसुरतनकसौजाइजा

सोमुखपाइकैं चवैमंदगतिगहैकोंध जोकनगरहै
हस्तिनीकंनछुनैहैंगदगदिखाइकैं ५
जोसावातकेदंपुन ओंका ,ओत
मरांम पासरहैपरतोतिकैकहांमथोसावाम
निय॒ को ५- एहेकामसठिानेकैलपतनझरन ह्वेसोंदै
दैउगहनैंमोवंदजानैंकरिपरिहास हहसाले
८१ हेवनलैंमा
वनसिंगारकोंसिगारकिधोंरुपहारोंस पंस्रु
सस्रंगद्विवतहैं नैरेसुधरतक्षीलगाइल

यत्रि०
४२ थेंलालनकेलोचनतौ सुंदरसुधासोंसींचियत
है।चीरयहिरेनकोघरगोहीरमेरीवारमांग
हीकेचीरायतहियोंचारीयतहे।स्योंस्योंकर
कांमहीलेवारनमवांरतहीसोतिनकेश्यांवि
नकेहेतदीजीयतहै।२५७।कुर्याहुंतौं।।पंज
नंकवलमृगमनानिकेजेनवारसुंदरमणतो
कोकर्योंविदारियतहै।चातुरहैंचलनाकेहैं
नागरहैंनायकहैंलायकहैंमानसविनामा
सयतहै।वाकेहैविसालहैंवडाईकेवैहैंतोधि

लोकेनेभागनेकौवेइरागायनेद औरगर्ह
रहीमौनरेवयहगादीकानंनेननसांर्देकों
नयोनिहारियनेहै ४८ न
ननकौनठिलागनजेरचनेनानककर्सैमेन
मलखाए जीह्वकेवानदुरैनं हाहगकेर्नं
वैहेगीनहंसोंमुलयें सुंदरमोवनमुल्लेम
सीकौनमईवलिवेसकेपाए ८८ नलोकेलि
नपोमोभवैचितवौनेकुमोरकीडाटिवचा
पैं ८० सायकैमेप्रत्नेवेलपनेतव

लायस्यौं साधुरैकै संलै हैगा ॥ कौजे कहा अपनौं व
धुहै कछु साधु जु वाहै कह्यौ धुकै हैगी ॥ सुंदर जो
लवहीन वयौं प्रथियां नारि स्यौं तौ न भांति र
हैगी ॥ श्रा ई कहां हौं विचारि न दष्यौ इहां वहां
लि कहां निवहैगा ॥ ६१ ॥ दिश्यप्रा ॥ कौन है हौं स
वारै जाहु भीतरि है प्यारी वह कौ है वज्र मारी
जिनु वाहु रपठाई हौं ॥ जा दिन लगौ है डीठि ता
दिन तै नीद हू नाठि सुंदर मैं विनती कै विधि
पै वचाई हौं ॥ मंत्र निपढाइ करि जंत्र नि मठा

इतंत्रनिगडाइकाल्हिकौद्भकेंजिवाइहैाकायोक
हाचाहततेसोईक्योंनकहोआजुकाकिपाटपा
रिवेकोंपारीपारिखाइहैा॥८॥सखादरिहासा
विथुरीअलकनेंनरसभरेफलकतजुहिआईर
तिमानिरसिकरसालसें॥पियकेदसनलाग
नियकेकपोलनिमेंचोकापाऽतियअवि
लीप्रलीवालसें॥छापसीकहांहेरहीसुंदरत
घरियहअैसेंकहिरहिवेकोंनइकछूष्यालं
सोंज्योंहीकहोकान्हांआएसोंहीप्यारीनिब

५

रछाइ देखौ मुसकाइ मुह माह्यौ फूलमालसौं ॥६३॥

॥ नायकाकौ परिहास ॥ दै हौं कहा दैव पानीकौ

बूडकमूंड तौ आगारथी सौं नस्यौ है ॥ जौ कहौं सुंद

र पावकसौं हसु पावकनौ निजनैं न कस्यौ है ॥ मो

रीकह्यौ ॥ सुस्यौं रुखियौं विछुनौं हरनाम मनम

ठौ पस्यौ है ॥ षिलनआप जु वामैं थवै तुम दीजि

ये मेरै जु हार रहत्यौ है ॥ ६४ ॥ नायका परिहास

नायका भूति ॥ गुलाव के फूलका लै पांवुरी ल

गाइ लाल मगमद लायौ थोठ वंजनु सौं स्यौं

कवो। अैसोरूपकोयैंप्यारी-प्रायोनेोहैप्यारीपासप्या
रीपथिअैठबैठीपाछिदैनहांनवेः काजरअधरमैं
नजावकलल्लाटमैंनसोहैवैठौधिजोपतयोंक
होप्रलीजेवारा घातोरहीलजाइहसेहरिहहस
हूहांसिहंसिघरोकहेोउदासबीसवें।।८५।।दोहा
।।दूतीभाव।।दूतपनेमें अतिनिपुनसोकहिदू
तीवांमा।।जोरिदेदूवरनैविरहादूतिनकेकां
मा।।८६।।जोरिदेदूतीकर्म्मलक्षः।।कवित्त।।सो
नोहेननेोदासधीअंचरदैजानतनपियपास

॥५५

कोरिवेकीबातकहांनाहैं॥मेरेलाइवेकीलाज
कीजोजालबुलिजातुआनुरनहूंजौबहुब
हीप्रयानीहैं॥यहरसरीतिकहीसुंदररसिक
कीजोरसहीसोमिलिलेहुअजौंबरवानीहैं॥मे
नासीपठाईजबपहरखटाईपरातीतिमेंबटाई
तबकौहूंक्योंहूआनीहैं॥९७॥नायकाकीसखी
कोदूतीसों॥डाढिसोनजोरेडीठिदैदैबैठेफेरेवाछ
सुंदररवसीठकहूंकहाकैसेतानीसों॥तिहारेंनो
जागीजककाहूकाहूजाहिजाहिहैंतौजाती

बहुह्यौंनिहारीज्यौंनघासीसौं॥नकेवओराति
ह्रैनयहैहैनलकछिननेहावेतुकेसंकेतजारे
हानवातीसौंहौंतोयकोजाईजाईहाहाधाइ
गहेपाइआपहीमनाईजाइलाइलैंदुछाती
सौं॥६८॥नायकाकेपछकीदूती॥कवित्त॥
ननकतनैनीकरसोंहनकौंतानलहौंजेतोघा
राहेमननेतातवकेहैगो॥जाहीमुखमौंसौंस
तरांनीमुनैंमेरीरांनीयहैमुखमैंनुकाकहं
नीहसिकेहैगो॥दुदहकुमरघनस्पांमन्न

६ के देषे ऐसें कामिनि कौ जौं न कार दैहै ऐह रहै
गो मेर लै मनाये तें न मांनत हौं लषा लालतौ
व दैगा मांनिनी जौ मानत व रहैगो ॥९९॥ ना
यक कौ पछि की दूती ॥ लाल अपनैं हैं आली ऐसै
नहिं से ये वलि कहा भयो वलि हसिनैं कुनंद नं
द है वेही अन बोली यु यत हिलि मिलि षलीय
त कै धौं कौ लियत कहि छुंदर यौं दै दैहैं ॥ हा
हुहा देषि मोहे हैं तोहि कोटि कोटि सौ हैं के सो
ऐसे समैं मानत ये अैसो मन मंद है के सौनी

कौनायकसकलसुखदायकहैकैसीनीकीचां
दनीहैंकैसौनीकौचंदहै॥२००॥विरहनिदंना॥
मेरीआलीआगेंकाल्हिटेढीचालचलिआईनाघरीनैं
वेलतनवोलतहसतहै॥जैसेंमीनविनुजलकौंहूं
नपरतनकलवेसुधिविकलभईऐसीसकत
है॥सुंदरतपैहैतनकहूंडारिरहीमननैंकुनस
मारेहरिआयतरसतहैं॥आंखिनमैंभौंहनमैंमु
खमुसकानिमैंठौरठौरनैंरठगठगौरीवसा
तहैं॥२०१॥अथनायकविरहवेदना॥कहैंव

तर०
।७
हू

नमालकहूंकंचनकीमालकहूंसंगसखाग्वाल
ऐसीचालचलिगईहै॥कहूंमोरचंद्रिकालकुट
कौनपटपुरलीमुकटकहूंन्यारीडारिदईहै॥कुं
डलअडोलकहूंसुंदरनवोलैवोलतलोचनहूं
लोलमोनैंकाहूहरिलईहै॥घूघटकोओट
हैकैचितयोंकिचोरिकरीलालनितैनवहांतैंलो
टपोटभईहै॥२॥अथअनागतकवर्णनंसोहा॥दु
हुवनकैंसिंगारसमसरसहोतहैध्यान॥जैसेंव
रनीनायकासौंनायकनिवखानि॥३॥मरद्ध

ठा। सो नायपति नुपपति वैसिक त्रिविधि भेद है
यह ताको॥ अथ होपति श्रनयाहोनुबपति वै
सिक पति गनिकाकौ॥ अ॥ अथपतिहताचेष्टा
कवित्त॥ हम सव श्रालीमिलीवेठी रंगरलिनि
में दुलही यों सहेलीसों खेल सा करै तहां इहवी
चि काहू बाल वा लनि में कह्यो कान्ह ऐसीड
रासुंदरी ज्यों को ऊ न डरानहे॥ छोडिकें विछौंना
मृग छौना ज्यों उछरि परी छाती छो हमरी हि
यें धार नुघर लहै॥ हो तो रह्यो देवे वे श्रनसु

व छोडो वसिठानी आनि परैगी॥९॥ दृष्टांत
अलंकार॥ जोबन के मद सों मतो चितवै चलै जु
नाहि॥ ताहि सों मद कहत हैं पंडित लोग विचा
रि॥१०॥ लक्षित भाव॥ जोवन के मद मांतो है सुंदर
नैन निकाई नरी कौं वनाये। चूनरिया चट
कीली हुवी लीकां वेसरिया चित लैन तुरा
रें॥ सो है पयोधर जे हरि गाढी हँस दरि राफि
यहै हेतु बिपा यें॥ नचावत नैन नचैं नटुवा
सी भृकुटि नि के त्रि जनो रस रयें॥११॥ दृष्टांत

जपन हुलसन छुटें॥ घरि चारिक्रो वैन पियत न चि
कैं यों अकुलाइ॥ निदेनि भागनि युयौं न पनक
है कावि राइ॥१४॥ पुनं मयदहन हिय देहकै दु
कूलदेखिसखलसौं लगन जाग्यो फूलनि कौ
गहनौं॥ सौं जौ सेजसरस कुंपमार घन मारस
रहै ते सरसानैं अवकहा कहनौं॥ धकै समान आ
ए सुंदर मय॥ नरिखि लटकौ है हरनी क्यौं होइ गो॥
निवहनौं॥१५॥ सघैं अत्यो कहतिं आघी रात्निह
हई पियन अजहूं न आए आली अपनौ अलं

हनौं॥४॥ मूरखनाकी वातकौं कहै कछु जौना
रि॥ मुग्धहाववतासौं कहैं पंडितलोक विचार
॥५॥ तिउ ताकैसी है कै सहैं रूप वैहाइ गकौंन
सरूप धरैं॥ जिनकौ उनि डारैं नसौं कहिं
दारए मनिमानिकमोतीकरै॥ पियपैसौउ
पायकछु है कहैं अपुनी अंखियानिसौं देखौ
वैरी॥ मनमोहन मोसौं नवोलतिहै मुसका
यकहा मुषमौंनकरै॥६॥ प्रौढाविहृतहाव
विषयकी वातनिकै चलैं तिय अंगरायजं

इक हाव मोहा तियन कहत हैं ताहि महाक
इ॥१०१॥ आवति है रूप की पलकें रूवकें ह
ग बोलति है अरसाते॥ चौं डिज पाइ उठे अंगरा
इ अमैं ठति है तनकौं करिहाते॥ अंग अनंग
तरंग रूकोरलि सुंदर औ॥ सुभाव नयाते॥ हो
ते है प्यारी पिया न वहां यों चलै जवसी कछु
कों रूकावाते॥१०२॥ [illegible] छिति हाव॥ पिय सौं
रिसियाते तिया करै न कछु सिंगार॥ सब भूम
नाइ सवारही एविं छिति प्रकार॥१०३॥ काज

सिं १०

५९

रकोंगहीतेलसुंगंठसिंगारकोसौंजसखीसव
ल्याई॥मीनमकौंज्यिसैरिसियातैंनिरादर
कैंदगलौंहचढाई॥कोऊनवोलिसकै॰शा
श्रीरलहांकविसुंदरमैंलपुताई॥भाजुमना
ईमनाईनिहोरिसखीकरिकैसैंहीकैसेव
नाई॥२०॥[illegible]॥लालमनावैवा
लकौंदैमनपनगोक॥बालबोलिगलमा
लसौंमारेयहविवोक॥२१॥आइघरेघर
भखनसंधेनिपाचितवैनउनैहठनोधे

लागे मनावन सौं हैं हहा करि ज्यौं रतनाय निवारच
नको धें ॥ लै है यहै जव सुंदर पाय हके रिकै टा
हूति मास र सौं धें ॥ कपोलनि कंज कला करि हैं कै
रहै कै ले फूलन की मालन सौं बांधे ॥ २२ ॥ विलोल
ताल ॥ चैन कहूं चित वन कहूं जौ आवे बि
य पास ॥ देखै पतिनि कौ सेज सव सौं धें से ज अवास
॥ २३ ॥ मो रे सुख मो है हग नि जो विन गवेनु दास
यौं विहसै मुसकाइ मुसिता सौं कहलिवि लास
रंध ॥ चितवन न कितहूं ने कितहूं कौं फूलवेली

भूलनि सौं भूलि लीनन चली पीयपास कौं ॥ वा
रवार सुसकाइ हैं हैजे हेरि मोहु सखीन्हि कौं व
हु कोइ करि परिहास कौं ॥ आइ पियपै गुगध रैं
लोक नागरि देखै वै ॥ ८ कवि छेौं नासे तु उर
अवास [illegible] कौं ॥ वैठा प्रेम मारि दूगा [illegible] मौं हठ म
लेलिव जवहां वधां नौ सुख रस वा विलास
कौ ॥ २५ ॥ [illegible] अंब अंबन चल
नभुधि तिन की कहु न सभार ॥ अन वलीजो
धनग है लाविहु लिन्हकार [illegible] एक हाथ वे

एएकवाइमेंमसूरीलीकटीकेलीनपूरीपाक
रहीहोठछाइहै॥केजरहीोकजराससंरतिन
गजराविसुंदरजराइनिकेसाजविसराइहै॥
भजकेंसवारीएहैंअंबरसुधारिसवदेखतहै
नारिकहेनारघरवाइहै॥हाथीकोसोछैयान
ईडोलतिहदैयापदकाहानयोमयायामेवा
नेकवभ्राइहै॥१॥इतिहावहेभाद्दूसमा॥
भ्रथविप्रलंभश्रंगारवैर्तनं॥विप्रलंभश्रंगा
रयोंसुंदरदुविधवखानि॥विकुरियोपरदे

रतिहै हाहाहंसिदेखिकहिमांनिहैतौमनलीजौ
नमांनिहैतौजानिहैकिहांसौयेकरतिहै ग्रथ
रहोरहूं ऐसौग्रवहीकहेतैभईगौनेहूनल
ईलईकैसैकैपरतिहै ३४ ॥
हावभावहावत्पैतैतियकौरूपसिंगारवि
भुरैतैजवभुभिराललिमरतिपहूपरकार ॥
३५ ॥ कवित्त ॥ ग्रथतरसनेतनजौहंसेनैनि
चौहोसीजौहभईजबवै रतिरंगग्रनंगानरं
मनिमैकुनरानमुनीवतिपातववै उपेक्षा

वनसुंदरऐसोअनेकसुतौवसुमाइरहेसवैं॥
उरसौंमसकेरसकेंवसकेंचसकैंजुजईसमके
अवै॥३१॥पुत्रकथन॥विरहवाचिनिपियगुन
निकोकरियेजहांवखांन ताहांसोंपहगनकथ
नसुंदरकरहनसुजांन ३७ कुंदनकेनगनकीनन
कछविनाकलिहासेवसुधअपनेंहगनकीनु
कातिहे हीरमोतीमानिकअनारदानेदेखि
नीहसवैरदजवनेंकुसुरिमुसिकानिहे सुंद
रजुसामलेनवाकेमुखवासकोसुफूलछोडि

सै॰रं॰

५

औरपोंतिपासमुडयतिहैं॥रूपकीउजारीछितु
दिगतेनकीजेप्यारी॥ऐसीवहप्यारीसुधिसारी
केसैंजातिहै॥७८॥ [illegible]
प्यारीसौंदरसनमिलनकौंनभांतिकरिहेपु
रसोचैंजियमेंजुयौंचिंताकहियेसो॥७९॥
केतेविचारविचारतजियमेंहजारनहूंरूप
वारवनायौ॥छंद॥दरसोकमिलेजुकैहैपरप्या
रीतचैंनहिमारप्रियवौ॥ऐसतौनाजि
हमारेकहांहैछवालीकाछानासौंछाली

हुवावौं हौं अपनी इन आंखिनि सौं उ आसिन कै
सै कै देखन पावौं ४० नैन अ
चैन न हू होत है विरहै विषा कौ पीर नासैगा जो
कहत है जै पंडित कौ विचार ४१ निच
देखनां जतन तैं नई विहाल वाल सुहालन मान
पुनि हालं जौं मैं नरति है अखिल है थायौ कि जौं अ
निलहा खाई आजी कां ल्हैं लै करै जौं वांनें कां ल सा
करसि है चित्र मैं चितेरी है कि सुंदर तु केरी है
कि मंजार न जरी है तु घरी सी नरति है मो दन

तुह्मारे नांम चौंकि परति है याही तें भरोसौ मोहि
जीवे कौ परतु है ... जाकौ कांम
कलेस तें सुंदर कछु न सुहाइ भलो बात लोगे तु
री लोग देंग सुनाइ ४३ इक तौ कुलकानि करी
कवि सुंदर कोकिल की दिन राति रहैं १ विरह
इ रहै निसि कौं निकै चंद दवदावति है जु वि थाव
हुतैं १ वहां वहलानि हैं वात्रक मांनत जांने
ते है मन लाजु इतै न पसारि विसारि है सारि
सवे घनसार तु सारंग सारि इतै ४४

तादौ फूलापलाहलै॥ विरहकोमकीपारतैं कहै
आंनकीआंनः तासोंकहतप्रलापनेजेकविहैंस
मानः॥धशा॥व्रः प्रित्री॥ ताराइतनलनीकेमांगमें
केमोतीफलचंद्रमांमनौंचंदमुखीकोवदनहै
थनतैंएकंजनेतेलखतौंकेलोचहैंचंपक
मनमुसोंनाकोसरनुहै॥३२॥ विरहेहैदलां
ताकेदानेयहदेखियतसुंदररूपतजांमोदा
गकेदरनुहैं मैतोंप्रेनप्रगनाकेशाछेंपव
लोकतहोनेकाहमोहिमाडमारतपरन

हैं ॥ ध ॥ व्याख्या [illegible] सुंदर वेदन मदन
की तौ लैं उपजै पीर ॥ हो इ दूबरी तन न लपै व्याधिक
है कवि धीर ॥ ४७ ॥ [illegible] कुंदन सौ तन वृष
भानुजू की नंदनी कौं चंपे कौ सौ फूल पंचवा
ननि कौ बांन हैं ॥ समान ताकौ जाकी उपमा
न श्यांम ॥ संसार मैं जानीयत सो भानुष
सुंदर निदांन हैं ॥ राजत है उर पर सु पयोधर
जुगल श्रृंग से सो ने हतौ ताकौ प्रति उमेर कौ
सांन हैं ॥ सोई तवैनि स दिन कलन परत छि

नस्कंनयोपियवितुजानैंपीरैपांनहैं॥४८॥
उन्मादजाहिनं॥देहा॥मिलिवेकीइछाकैरवें
नदिमैंलैनस्वाद॥विकलहेययातपतिसौंसो
कहियेउन्माद॥४९॥कवित्त॥उनमदमांतीच
लेकाहूकेनंगहेंरहेजाइजानैंसोईकहैंवसा
वेफरनहै॥केगईपारीपानीपानकेनहेतने
रेछिनकमैंसारीछिनुप्राणीसीवरनतहै॥५
थकीसीचकीसीजकीसीनकीजकरीसीप
करीसीसुंदरघरघरातधीरनधरतहै॥जा॥

ह्नुनतैंछवानीकेनीछतईछनदेखेनांछ्विन
लेनटकेसेछेदनकरनेहै॥५०॥ सुविंदिंपुनितु
लिंगारइस्सायूानंस्फुरते॥दावह्वाविन्यावज्ञित्ता॥
केसंघरैंरहतनरूषाईमाईनिठुराईजांनैंकछु
जोंननननथोरीवेसवितए॥भावनअ्रथ॥चेतोय
हसुंदरइतीकथे[redacted]कामकीकहतैंवातेधा
लैंमपाइनए॥केसाहेसयानीकाहहकेंहैने
कुंजांनीकितवेठिरहीं॥आली॥आली॥श्रासस
इनए॥तारेहनमोरेहगकोरनिकाश्रारानि

सौंदेषौ हेकु चोरजैसे चोरा चोरी।चितए॥४१॥पहिलें हीं
गई नीकी बात न जगाइ लई मैं हूं जो नी भली भई आजु
व लगत हैं।सुंदर हू हसि कैं चलाई रसकथा कछू हंसि
हंसिरी किरीकि मुरि मुसकाति है॥ऐसें तिहारे नाम
भीनौं हो जब हौं।पिय ओरैं रंग औरैं रूप औरैं भई भु
ति है।देषत ही सो हैं भई नैंना।निरछौं हैं वे फिरि गई
गु भौं हैं त्यौं कमान फिरि जात है॥४२॥वानक सौ बु
नि कैं पचान कही आइ करि हाई भाइ चाइन कैं
चित चोरि लै गई।पघरक पर मगमद कत रंगैं

६ आछे अंग अंग देखि सुधि सुंदर सबै गई ।। निरखि
तैकै नैन नीरसे चलाइ नारि लटकाइ घूंघट नवा
इ नैकै नैन गई ।। चलि मुरि मुसकाइ अंचरा कछू डु
लाय छतियां दिखाइ छैके छतिया मैं कै गई ।। ५३
लोह लउंदर रंग भरि है किधौं प्रति सौं धि सुधा सौं
सुधारी ।। चंचल हो सु चलै न हलै न हलाहल व्या
एसी ग्वाल सभारी ।। घूमनदार नीरे गालारसी
नी छबि लीकिधौं मदसौं मन वारी ।। आनु कि
धौं कहुं सांची कहो इन नैन निकांन्ह कुमारनि

हरी ५४ देखोजहांतहमोदमसरनिद्र रिनैं दौरत
हीरसमाने आजुहीजाइअगाऊमिलैंउरअंतर
योंअपनाइनआनैं सोकहेसुंदरकोकरहैंसमु
नावैस्योंदोकणद्वैकरिजानैं मोहिकहासिषदेत
सषादेषिलअपषियांसिषयोईनमानैं ५५ नैदनं
दनठाढेहेहारनणकहिसुंदरमंदिरकेद्यासकें नि
करीहुथनानुटीअलीजुअलीलिपिलीमृगली
मैंचलीहसिकें नवनेहरिकेदगनारनिमांझि
योंलघेकोहृपरहोवसिकें मानोंहलयोहेसों

नैसौरंगअनेगसुनादिकसौटनिमैंकासिकैं॥५६॥
भावतस्योंमधुरामैंजुनेहरिगहनितेंलियदोरि
करीसी॥नाजकौंछोड़िस्यौंडोरिटूटनम्हठितेछु
रिवलोचकरीसी॥हलेनचलेनठगासासवेंवि
मुकीसाचकीसाजकाजकरासी॥देषतवांमधु
रीमूरतिकेकहिंसुंदरमैंकरतेपकरासी॥५७॥
वेंडाइजंभाइतवहोतेभाइसुदरवेवारायों
नषाइवातवोलनिलगातिहैं॥पावकसेरातेनैं
नैनजावकसेजुवापैंरावकलेदेहइनादों

कनिदगतिहै।प्रलिनै।केसाथकुंजगलीमैंजली
गईकलासापिलाचलाहैहलैंनचलतिहै।चि
नवनिकिधौंमटिगईघरिनाबनाठकांन्हकीनौ
डीठिमाईडीठिलीजगतिहै।४५।काहकौंदुरा
वतिहैहमैंवहरावतिहैकौंनकहनावतिहैमू
ढीसौंहंबातिहै।।

मास्केनमाइ विनुवाहैरै दरमेंपाइ साउरे साउके
सांस मांभिवसियतुहै ॥ देवकेकांनिविनंनूपुरकी
पैरैंधुनि चोरकी सीनाइ तौ अटाही घसियतुहै ॥
देखिवेकीहौंसहियेपरौ सलिसदांरहैवोलनेहै
वोलगरेहीमेंकसियतुहैं ॥ सुंदरकहंकेकोन्हैको
सौंपहिचांनि जांनिकाकाकी सौं कहा जानौं कै
संहसियतुहै ॥ १० ॥ गोरसलै चली मिली श्रालि

निमेंग्वालिएकआईघरोनयोवाचिवाटमेंवि
हारमोगनजगातकहेसुंदरीरसानअतिरूबी
नईजानसनरानदेतगारीहैआगैगईसखीस
वसकेजाहरहीजबप्यारकह्योजाहितववोलि
हेसोप्यारीहैजारोदईआयैजिनदेख्योभावेसी
रपुनिकीजेकहाजीकहियेजगमेंजिवारीहै॥
१२॥पुनिनिकेसंगचलीमितिकुंजगलीमेंक
लिनिकोहाथचलायो॥हसीसखीसोंजवआ
एऊहांहरिहनुम

॥ त्रिकौ मित्रसनं ॥ कवित्त ॥ परदेसतैं प्रानसुंदर
आये हुलास विलास वढे सगरे ॥ उरकंठ लगा

दूलहै ललनां गहि भैटे अनंद सौं अंक भरे॥ तर कौ है
नीदर कौ अंगिया मनि माल नें टूटि के लाल परे
॥ मांनौं पीक भले नियके हियतें बिरहागनि के अं
गारनि केरे॥४४॥ सोमावली वर्ननं ॥ कं॥ न्हग है वृ
षभानुसुता की अवांन कहा अवरा की किनारी
॥ देषि रे मावली रूप की रासि रहै मन हू मन री
झि पुरारी॥ परब बैर जे संकर कौं कहि सुंदर अे
सो अनंग विचारी॥ बड़ै सकेनी सरैनें नमें दंन कें
मान हुमैं न सलाक सवारी॥४५॥ मांनौं भुजंगनी

कैंजनवटीमुखतेंपरगकरह।।अककैस्यौं।। कारीमह
लटकारीहैसुंदरभाजिरहीमिलिसौंहासौं।। लैकी
लटबालटकाटिगओरगईवाटिकैछविआनन
कीयौं।। अंकवहैदएदूजीभकारीकेहेनहपैयन
कामुहरैंस्यौं।।७६।। सोत्रावृत्तौनां।। चिहुटासौंचुनि
नीकेंनांचिकेनिकटराषीनवेनीकानीवाकुच
कोटिकधरतिहै।।कसिबांधीडोरीराषीराषीकी
सीफूंदाछोरीसुंदरगलावकीकलासीविहरति
है।। सहजसौंबातवालवाटीकेहेंसषिनिसौंल

बेमें तमासेजैसे घघरी करनि है। हंके है जु ससिमु
वे हां कहे है दवा कि जाइ॥ हं सिपरे श्रोच को नुद कि
सी परनि है॥ ७॥ सांऊ स में कौंप छा हडी ला की जु छ
इसों ऐसी लखाई नि हारी॥ चंदन कौं नग जाल पि
तो करताई रवोपलह्म कौं निहारी॥ तारे तहां दिग
चंद कला क विसुंदर सो छवि एसी विचारी॥ मैन
मनो गढ गोजाग लो ल निषज निषल कौं वो लि
गलोल संवारी॥ ८॥ पूला कुमोदनि मोद मैं चंद
विनो द सौं सुंदर तारे है यों है॥

चेदकैंध्रुंसनिकैकरिस्तवम्यौंविघ्निनासिनंभं
वज्रानैं जनलकैंवनिम्यौंतवनाइदसौंदिसए

मदिरा छकी है मानौं ॥७०॥ सुंदर वांनी या तें कहि नर
वांनी हि मेलाई ॥ जे समगार सरीत्ति कैं सब ही मग
ख्यो जाई ॥७१॥ यह सुंदर सिंगार की पाथार चालि
चारि चकोरे होइ कब कहूं लौं नैम कवि प्रकासि
॥७२॥ इति श्री मन्महाराज कविराज [illegible]
दर शृंगार संपूर्ण ॥ लिखितं [illegible] ॥
संवत् ॥ [illegible]